भूमिका

भारतीय संस्कृति का प्रतिबिंब लोक कलाओं में झलकता हैं। इन्हीं लोक कलाओं में कठपुतली कला भी शामिल है । पहले तो नाटकों को प्रस्तुत करने का माध्यम लोक परम्पराओं की नाट्य शैलियाँ या फिर कठपुतली ही थी। कठपुतली हमारे देश की सांस्कृतिक धरोहर है, साथ ही प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम भी।

कठपुतली का इतिहास बहुत पुराना है। वैसे भारतीय शास्त्र तो इनकी कई हजार वर्ष की परंपरा को प्रतिस्थापित करते हैं । ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में पाणिनि की अष्टाध्यायी के नटसूत्र में पुतला नाटक का उल्लेख मिलता है । भारत में पारंपरिक पुतली नाटकों की कथावस्तु में पौराणिक साहित्य, लोककथाएँ और किवदंतियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्राचीन काल से ही पुतली चालक अनेक प्रकार के खेल दिखाकर अपनी आजीविका चलाते थे।

भारत में कठपुतली कला की सात शैलियाँ विद्यमान हैं, जिसमें से कुछ तो केवल अवशेष के रूप में रह गयी हैं। उड़ीसा में सूत्र संचालित पुतलियाँ, उत्तर प्रदेश में गुलाबो-सुताबो, बंगाल में छड पुतुल, राजस्थान में ललुआ पुतली, तमिलनाडु में बोम्मलोट्टम पुतलियाँ प्रमुख है। राजस्थान की कठपुतली भाटो अथवा नटो द्वारा प्रयोग में लाई जाती हैं। इनका रंगमंच बहुत ही सादा होता हैं । राजस्थान की कठपुतलियों के कथानक वीर गाथाओं पर आधारित हैं- जैसे विक्रमादित्य के समय की सिंहासन बत्तीसी, अमर सिंह राठौड़ का खेल आदि। राजस्थानी कठपुतली में विलक्षण संचालन शैली तथा विस्मयकारी नाट्य विधि हैं, जिसका अपना एक अलग स्थान हैं, जो की इसकी महत्वपूर्ण विशेषता हैं। दुनियाँ में कहीं भी भारत जितनी शैलियाँ नहीं है। कि आज भी लोग परंपरागत शैली की कठपुतली को देखने के लिए मिलो-कोसो दूर से आते हैं। इसलिए उसे सुरक्षित रखना आवश्यक हैं।

कठपुतली कला एक मिश्रित कला हैं, इसमें लेखन कला, नाट्यकला, चित्रकला, मूर्तिकला, वस्त्रनिर्माण, रूप-सज्जा, संगीत, नृत्य जैसी कई कलाओं का सम्मिश्रण हैं।

इस परंपरा को बचायें रखने के लिए राज्य सरकार या क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र और संगीत नाट्य अकादमी जैसी कला से जुडी संस्थाओं को इनके लिए प्रयास करने चाहिए, इसके अलावा सरकारी बैंकों से लंबी अवधि के ऋण उपलब्ध कराने चाहिए ताकि उन्हे अपने कार्य को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जा सके।

उपर्युक्त विषय को जानने के प्रति शुरू से मेरी रुचि रही है तथा उसके रंगमंचीय प्रस्तुति पक्ष को जानने की रुचि ने मुझे इस विषय को चुनने को प्रेरित किया। अकादमिक जगत में शोधार्थी की जानकारी में विषय : **भारतीय पुतुल नाट्य परंपरा में राजस्थानी कठपुतलियों का अध्ययन एवं विश्लेषण** से संबन्धित कोई भी शोध ग्रंथ अथवा पुस्तक में उपलब्ध नहीं हैं।

प्रस्तावित शोध विषय में कठपुतली जैसे बृहद विषय को ध्यान में रखतें हुए पूरे भारत की पुतुल नाट्य परंपरा पर प्रकाश डालते हुए राजस्थान की कठपुतली को केंद्र में रखा गया है।

उक्त लघु-शोध कार्य हेतु विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। साथ ही साथ क्षेत्र सर्वेक्षण, अनुसूची, साक्षात्कार (ऑडियो-वीडियो साक्षात्कार) का भी प्रयोग किया गया है। इसके अलावा जितना संभव हुआ उतने कठपुतली नाट्य प्रदर्शनों की विडियो रिकॉर्डिंग एवं फोटोग्राफ्स का उपयोग भी शोध ग्रंथ में किया गया है। सामग्री संकलन में प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक स्त्रोत (इन्टरनेट के विशाल साम्राज्य से) स्त्रोत का भी इस्तेमाल किया गया है।

इस लघु–शोध प्रबंध को चार अध्यायों में विभाजित किया है –

प्रथम अध्याय-

पुतुल नाट्य का उद्भव एवं विकास : इस अध्याय में विभिन्न विद्वानो के मतानुसार पुतलियों के आदिकालीन साक्ष्य के बारे में चर्चा की गयी है। इसके अलावा पुतुल रंगमंच की वैश्विक तथा भारतीय परंपरा का भी उल्लेख किया गया है।

द्वितीय अध्याय-

राजस्थानी कठपुतली का उद्भव एवं विकास : इस अध्याय में राजस्थान में कठपुतली का उद्भव कैसे हुआ तथा उस प्रदेश में कौनसी पौराणिक लोक गाथाओं का प्रचलन है इसके बारे में बताया गया है। इसके अलावा कठपुतली प्रदर्शन का आरंभ कब और किस प्रकार हुआ इसकी भी चर्चा की गयी है।

तृतीय अध्याय-

राजस्थानी कठपुतलियों के कलाकार एवं उनकी वर्तमान स्थिति : इस अध्याय में राजस्थान में कठपुतली के संचालक और निर्माता कहाँ-कहाँ और किस समुदाय के लोग है उनके नाम दिये गए है। इसके अलावा कठपुतली के लेखक तथा वर्तमान में उनकी स्थिति कैसी है। सरकार या कोई और संस्थान उनके लिए किस प्रकार के प्रयास कर रही है इसका उल्लेख किया गया है।

चतुर्थ अध्याय-

राजस्थानी कठपुतलियों के कथानक, संचालन प्रविधि एवं प्रस्तुतिपरक विशेषताएँ :

इस अध्याय में राजस्थान में प्रचलित कथानक कौनसे है इसकी कथाओं के बारे में बताया गया है। इसके अलावा कठपुतली की संचालन प्रविधि एवं निर्माण प्रक्रिया को दर्शाया गया है। तृतीय उप अध्याय में कठपुतली की प्रस्तुतिपरक विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है।